1 BA Part – I (MH) Date – 05.05.2020

प्रश्न: "ओकि कहलें तों, विआह भेलो पर हमरा सासुरक अनुभव नहि हैत। हमरा वरक काज नहि छल, बाबूजीकें जमाय चाहैत छलनि, बड़का पाँति वला, सेह 'अनलनि। ... ... ने वर छनि ने गृहस्थी।"

उत्तर: प्रस्तुत गद्यांश श्री प्रभास कुमार चौधरी रचित 'हमरा लगा रहब' उपन्यासमें लेल गेल अछि। विलास-पुरक जमींदार कल्लू चौधरी अपन बेटी मालाक विआह एक प्रौढ़ अलक्ष पुरुषसँ जे ऊँच जाति पाँति वला छलथिन तिनकासँ कराओल। पन्द्रह - सोलह वर्षक किशोरी माला अपना हृदयक व्यथा - कथा अपन छोट बहिन शीलाकें कहैत अछि। तोरा ओ भाणीकें घर - गृहस्थी चलब लेल कनियाँक खगता छैक छलनि से घर - गृहस्थी त' छनिहें ने। हुनका त' मात्र मौगीक देह चाहैत छलनि, ओ जातिक दाग से त' मासे - मासे भेटिये जाइत छनि।

Scanned with CamScanner

(2)

प्रश्न : "ओकरा देखैत छलैक ? हमर बेटा अछि अमित सात वर्षक भेल। मुदा ओ हमर खाली बेटा अछि ओकर कहियो बाप नहि देखा। ओकर भार तोरा लेबऽ पड़तौक।"

उत्तर : प्रस्तुत गद्यांश श्री प्रभास कुमार चौधरी लिखित 'हमरा लेल रहब ? उपन्याससँ लेल गेल अछि। एहि गद्यांश मे मालाक कथ्य अछि। माला जमींदार कल्लू चौधरीक बेटी छलीह। जे पति आ पिताक घर छोड़ि ककरो संग गाम छोड़ने छलीह। आ आब कोठाक गणिका छलीह। हमर बेटा अमित जकर बापक कोनो ठेकान नहि, तकर भार अपन बाल संगी प्रभाव केँ दैत छथि। माला दुलहा रोग सँ मृत्युशय्या पर छलीह।

शानी मिश्रा
मैथिली विभाग
आर० एन० कॉलेज
पण्डौल, मधुबनी

Scanned with CamScanner